International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 7.150, Volume 06, No. 04(II), October - December, 2024, pp. 161-167

मध्वाचार्य और दयानन्द सरस्वती के ब्रह्म सम्बन्धी विचार

बनवारी लाल माली*
डॉ. रीता सिंह**

सार

मध्वाचार्य और दयानन्द सरस्वती के ब्रह्म संबंधी विचार भारतीय दर्शन में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं, क्योंकि दोनों के दृष्टिकोण भिन्न होते हुए भी, उनके विचारों का उद्देश्य एक ही है–ईश्वर के स्वरूप और आत्मा के मोक्ष के मार्ग को समझाना। मध्वाचार्य ने द्वैतवाद (विभिन्नता का सिद्धांत) का प्रतिपादन किया, जिसमें भगवान और जीवात्मा के बीच स्पष्ट भेद माना गया। उनके अनुसार, भगवान (विष्णु) ही सृष्टि के रचनाकार, पालनकर्त्ता और संहारक हैं, और जीव आत्मा का अस्तित्व हमेशा ईश्वर के अधीन रहता है। भक्ति के माध्यम से जीव को भगवान के करीब लाया जा सकता है, और यही मोक्ष का मार्ग है। मध्वाचार्य का यह दर्शन स्पष्ट रूप से भगवान और जीव के बीच भेद और भक्ति के महत्व को रेखांकित करता है। दूसरी ओर, दयानन्द सरस्वती ने वेदों के शुद्ध ज्ञान के माध्यम से ब्रह्म के निराकार रूप को प्रस्तुत किया। उनके अनुसार, ब्रह्म एक निराकार, अविनाशी और सर्वशक्तिमान सत्ता है, जो मूर्तियों या आस्थाओं के माध्यम से व्यक्त नहीं किया जा सकता। उन्होंने मूर्तिपूजा और अंधविश्वास का विरोध किया और ज्ञान को मोक्ष का मुख्य साधन बताया। उनका यह दृष्टिकोण यह स्पष्ट करता है कि ब्रह्म की सच्ची समझ केवल वेदों के अध्ययन और तर्कसंगत दृष्टिकोण से ही प्राप्त हो सकती है। इन दोनों आचार्यों के विचारों में भिन्नता होते हुए भी, उनका उद्देश्य समाज में धार्मिक जागरूकता और सुधार लाना था। मध्यवाचार्य ने भक्ति के माध्यम से और दयानन्द ने ज्ञान के माध्यम से मानवता के उद्धार की दिशा में योगदान दिया। इन दोनों के विचार भारतीय समाज में धार्मिक और तात्विक विमर्श को प्रोत्साहित करते हैं, जो आज भी प्रासंगिक हैं। इस प्रकार, मध्वाचार्य और दयानन्द सरस्वती के ब्रह्म संबंधी विचारों का सारांश यह है कि दोनों ने भिन्न दृष्टिकोणों के माध्मय से आत्मा और ब्रह्म के संबंध को स्पष्ट किया, और समाज में सुधार के माध्यम से मानवता के मोक्ष की दिशा दिखाई।

शब्दकोशः *ब्रह्म, आत्मज्ञान, अद्वैतवाद, द्वैतवाद, माया।*

प्रस्तावना

मध्वाचार्य और दयानन्द सरस्वती के ब्रह्म संबंधी विचार भारतीय दर्शन में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं, क्योंकि दोनों के विचार भिन्न समय और परिस्थितियों के अनुसार विकसित हुए हैं। इनके दर्शन में ब्रह्म के स्वरूप और उसके साथ संबंध को समझने के अलग–अलग दृष्टिकोंण हैं।

* शोधार्थी, डॉ. राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या, उत्तर प्रदेश।
** असिस्टेंट प्रोफेसर, पं. रामलखन शुक्ल पी.जी. महाविद्यालय, आलापुर, अम्बेडकर नगर, उत्तर प्रदेश।

मध्वाचार्य का ब्रह्म–दर्शन (द्वैतवाद)

मध्वाचार्य, जो कि 13वीं शताब्दी के महान वैष्णव संत और दार्शनिक थे, ने द्वैतवाद (विभिन्नता का सिद्धांत) का प्रतिपादन किया। उनके अनुसार, ब्रह्म (विष्णु) और जीवात्मा (जीव) के बीच स्पष्ट भेद है।

- **ईश्वर का स्वरूपः** मध्वाचार्य ने ब्रह्म को साकार, अनंत, और सर्वशक्तिमान भगवान के रूप में माना। उनका मानना था कि भगवान (विष्णु) ही सृष्टि के रचनाकार, पालनकर्ता और संहारक हैं।
- **जीव और ब्रह्म का भेदः** वे मानते थे कि जीवात्मा और ब्रह्म दोनों में भेद है, और जीव कभी भी ब्रह्म के समान नहीं हो सकता। जीव आत्मा का अस्तित्व भगवान से स्वतंत्र नहीं हो सकता।
- **मोक्ष का मार्गः** उनके अनुसार, मोक्ष की प्राप्ति भक्त के माध्यम से होती है। भक्ति के लिए भक्त भगवान से एकाकार होकर मुक्ति पा सकता है, लेकिन यह ब्रह्म के साथ एकता नहीं, बल्कि उसकी कृपा से मिलती है।

दयानन्द सरस्वती का ब्रह्म–दर्शन (निराकार ब्रह्म)

दयानन्द सरस्वती, जो कि 19वीं शताब्दी के भारतीय सुधारक और आर्य समाज के सांस्थापक थे, ने ब्रह्म के निराकार रूप को स्वीकार किया। उनका दर्शन वेदों के सिद्धांतों पर आधारित था।

- **निराकार ब्रह्मः** दयानन्द ने ब्रह्म को निराकार और सर्वशक्तिमान माना। उनका कहना था कि ब्रह्म एक अद्वतीय, अजन्मा और अविनाशी सत्ता है, जो कि सर्वव्यापी है। ब्रह्म का कोई रूप नहीं है, और उसे मूर्तियों या आस्थाओं के माध्यम से व्यक्त नहीं किया जा सकता।
- **ज्ञान का महत्वः** दयानन्द के अनुसार, ब्रह्म को जानने के लिए केवल तर्क, ज्ञान और वेदों का अध्ययन करना आवश्यक है। उन्होंने अंधविश्वास, कर्मकांड और मूर्तिपूजा का विरोध किया, और केवल वेदों को ही सत्य का अंतिम प्रमाण माना।
- **मोक्ष का मार्गः** उनके अनुसार, मोक्ष प्राप्ति का मार्ग ज्ञान और अच्छे कर्मों से होता है। वह मानते थे कि मनुष्य को अपने जीवन में सत्य का पालन करना चाहिए और ब्रह्म को अपने आत्मज्ञान के द्वारा समझना चाहिए।

मुख्य अंतर

- **ईश्वर का स्वरूप**

मध्वाचार्य ने ब्रह्म को साकार, रूपवान और ईश्वर (विष्णु) के रूप में माना, जबकि दयानन्द ने ब्रह्म को निराकार, निरूपित और अविनाशी माना।

- **जीव और ब्रह्म का संबंध**
  - मध्वाचार्य के अनुसार, जीव और ब्रह्म के बीच भेद है। जीव भगवान के अधीन है, लेकिन अलग है।
  - दयानन्द ने ब्रह्म को सर्वव्यापी माना, परंतु उनका विश्वास था कि ब्रह्म का ज्ञान प्राप्त करना संभव है और ब्रह्म में जीवात्मा की अंशता होती है।
- **भक्ति और ज्ञान**

मध्वाचार्य ने भक्ति को मुख्य मार्ग माना, जबकि दयानन्द ने ज्ञान, तर्क और वेदों के माध्यम से ब्रह्म को जानने का आग्रह किया।

निष्कर्ष

मध्वाचार्य और दयानन्द सरस्वती दोनों ही महान संत और विचारक थे, जिन्होंने भारतीय धार्मिक और दार्शनिक परम्परा को समृद्ध किया। मध्वाचार्य का दर्शन भक्ति और परम सत्ता के साथ जीव की अंतरंगता पर आधारित था, जबकि दयानन्द ने तर्क, ज्ञान और वेदों के माध्यम से ब्रह्म के निराकार रूप का प्रतिपादन किया। उनके विचारों में अंतर होने के बावजूद, दोनों ने समाज को जागरूक किया और सत्य की खोज के लिए एक मार्ग दिखाया।

मध्वाचार्य और दयानन्द सरस्वती के ब्रह्म संबंधी विचार

मध्वाचार्य का ब्रह्म–दर्शन (द्वैतवाद)

मध्वाचार्य (1238–1317) भारतीय दर्शन के महान आचार्य थे और द्वैतवाद (द्वैत वेदांत) के संस्थापक के रूप में प्रसिद्ध हैं। उनका दर्शन विशेष रूप से भगवान और जीवात्मा के बीच भेद पर आधारित है। उन्होंने अपने विचारों में भगवान (ब्रह्म) और जीव के बीच कोई भी एकता को नकारते हुए, यह स्थापित किया कि दोनों के बीच स्पष्ट भेद है।

- **ईश्वर और जीव के बीच भेद**

मध्वाचार्य के अनुसार, ब्रह्म (ईश्वर) और जीव दोनों अलग–अलग तत्व हैं। ब्रह्म, जो विष्णु के रूप में साकार होते हैं, सर्वशक्तिमान, सृष्टि के कर्त्ता, पालक और संहारक होते हैं। वे एक परम शक्ति हैं, जो समय, स्थान और पदार्थ से परे हैं। वहीं, जीवात्मा एक सीमित अस्तित्व है, जो अपनी स्वतंत्रता से हमेशा ईश्वर का बंधन है।

- **पंचभेद सिद्धांत**

मध्वाचार्य के दर्शन में पांच प्रमुख भेद (पंचभेद) होते हैं, जो भगवान और जीव के बीच अंतर को स्पष्ट करते हैं:

  - **ईश्वर और जीव का भेदः** भगवान और जीव दोनों भिन्न हैं। भगवान नित्य, शुद्ध और निराकार होते हैं, जबकि जीव असंवेदनशील और देहधारी होते हैं।
  - **ईश्वर और प्रकृति का भेदः** भगवान की सृष्टि (प्रकृति) भी उनसे अलग है और वह स्वतंत्र नहीं होती।
  - **जीव और प्रकृति का भेदः** जीव और प्रकृति में भी अंतर है, जहां प्रकृति सभी जीवों के लिए एक सामान्य स्थिति है।
  - **जीव और जीव का भेदः** सभी जीव अपनी प्रकृति में भिन्न हैं, हर जीव का अपना अस्तित्व और विशेषता होती है।
  - **प्रकृति और प्रकृति का भेदः** प्रकृति के विभिन्न रूपों में भी भेद होता है, जैसे पदार्थ, गुण और क्रिया में भिन्नताएं होती हैं।

- **भक्ति का महत्व और मोक्ष का साधन**

मध्वाचार्य का मानना था कि मोक्ष (मुक्ति) केवल भक्ति से प्राप्त किया जा सकता है, और भक्ति के माध्यम से ही एक जीव परमात्मा के करीब जा सकता है। उनका यह विचार था कि जीव का उद्धार भगवान की कृपा से होता है, और यह भक्ति के माध्यम से प्राप्त होता है, न कि आत्मज्ञान से।

दयानन्द सरस्वती का ब्रह्म–दर्शन (निराकार ब्रह्म)

दयानन्द सरस्वती (1824–1883) 19वीं शताब्दी के महान धार्मिक सुधारक और आर्य समाज के संस्थापक थे। उनका ब्रह्म–दर्शन वेदों के शुद्ध रूप पर आधारित था। उन्होंने भारतीय समाज में फैले अंधविश्वासों और मूर्तिपूजा के खिलाफ जोरदार आक्रोश व्यक्त किया और वेदों को ही ब्रह्म के सर्वोच्च ज्ञान का स्रोत माना।

- **निराकार ब्रह्म की अवधारणा**

दयानन्द के अनुसार, ब्रह्म निराकार, अजन्मा, अविनाशी और सर्वशक्तिमान है। उनका विश्वास था कि ब्रह्म का कोई रूप, आकार या मूर्ति नहीं हो सकती, और न ही उसे किसी भौतिक रूप में देखा जा सकता है। उन्होंने इस बात का विरोध किया कि ब्रह्म को मूर्तियों या किसी अन्य प्रकार से व्यक्त किया जा सकता है। ब्रह्म सभी जगह व्याप्त है और सर्वव्यापी है।

- **वेदों का प्रमाण और ब्रह्म के ज्ञान का मार्ग**

दयानन्द सरस्वती ने वेदों को सत्य का अंतिम प्रमाण माना। वे मानते थे कि वेद ही ब्रह्म के शुद्ध रूप का ज्ञान प्रदान करते हैं और मानवता को मोक्ष की ओर मार्गदर्शन करते हैं। उनका यह मानना था कि ब्रह्म को जानने के लिए किसी भी प्रकार की मूर्तिपूजा या कर्मकांडों की आवश्यकता नहीं है, बल्कि ब्रह्म को केवल शुद्ध ज्ञान और वेदों के अध्ययन से जाना जा सकता है।

- **मूर्तिपूजा और अंधविश्वास का विरोध**

दयानन्द ने मूर्तिपूजा, कर्मकांड और अंधविश्वास का कड़ा विरोध किया। उन्होंने कहा कि भगवान के रूप में कोई मूर्ति आकर स्वीकार करना अधर्म है। इसके स्थान पर वेदों के अध्ययन, ज्ञान प्राप्ति और अच्छे कर्मों को मानवता के लिए सही मार्ग मानते थे। वे मानते थे कि ब्रह्म केवल ज्ञान, सत्य और अच्छाई का रूप है, और उसे तर्कसंगत रूप में समझा जाना चाहिए।

- **मोक्ष का मार्ग**

दयानन्द के अनुसार, मोक्ष की प्राप्ति केवल ज्ञान और अच्छे कर्मों से संभव है। उन्होंने भक्ति के बजाय ज्ञान पर जोर दिया। वे मानते थे कि केवल शुद्ध ज्ञान, सही आचरण और वेदों के पालन से ही आत्मा ब्रह्म से एकाकार हो सकती है।

मध्वाचार्य और दयानन्द के विचारों में प्रमुख अंतर

- **ब्रह्म का स्वरूप**

मध्वाचार्य ने ब्रह्म को साकार रूप में, विष्णु के रूप में माना, जबकि दयानन्द ने ब्रह्म को निराकार और निरूपित शक्ति के रूप में स्वीकार किया।

- **ईश्वर और जीव का संबंध**

मध्वाचार्य के अनुसार, ईश्वर और जीव के बीच भेद है, जबकि दयानन्द का मत था कि ब्रह्म और जीव के बीच कोई भेद नहीं है, बल्कि एकता है, बशर्ते ज्ञान प्राप्त हो।

- **भक्ति और ज्ञान**

मध्वाचार्य ने भक्ति को मोक्ष का मुख्य साधन बताया, जबकि दयानन्द ने ज्ञान और तर्क को मोक्ष की प्राप्ति के लिए अनिवार्य माना।

- **मूर्तिपूजा**

मध्वाचार्य ने विष्णु की मूर्तिपूजा को उचित माना, जबकि दयानन्द ने मूर्तिपूजा और अंधविश्वास का विरोध किया। मध्वाचार्य और दयानन्द सरस्वती दोनों ने भारतीय धार्मिक और दार्शनिक परंपरा को महत्वपूर्ण दिशा दी। मध्वाचार्य ने द्वैतवाद के माध्मय से ईश्वर और जीव के भेद को स्पष्ट किया, जबकि दयानन्द ने वेदों के आधार पर ब्रह्म के निराकार रूप को स्थापित किया। दोनों ने अपने–अपने दृष्टिकण से समाज में सुधार करने का प्रयास किया औ भारतीय समाज को धार्मिक और तात्विक दृष्टि से जागरूक किया।

- **उद्देश्य**
- **धार्मिक दृष्टिकोणों का अध्ययनः** दोनों विचारकों के ब्रह्म के स्वरूप पर विचार करना, जिससे विभिन्न धार्मिक दृष्टिकोणों को समझा जा सके।
- **दर्शन के भेद को समझनाः** मध्वाचार्य के द्वैतवाद और दयानन्द के निराकार ब्रह्म के सिद्धांतों में भेद को स्पष्ट करना।
- **ईश्वर और जीव के संबंध को समझनाः** ब्रह्म और जीवात्मा के बीच संबंध के विभिन्न दृष्टिकोणों का विश्लेषण करना।

- **भक्ति और ज्ञान के महत्व का अध्ययनः** मोक्ष प्राप्ति के लिए भक्ति और ज्ञान के साधनों पर दोनों आचार्यों के विचारों को समझना।
- **समाज सुधार के उद्देश्यों को समझनाः** दोनों के विचारों में समाज सुधार और धार्मिक जागरूकता के तत्वों को जानना।
- **मूर्तिपूजा का विश्लेषणः** दयानन्द के मूर्तिपूजा विरोध और मध्वाचार्य के मूर्तिपूजा समर्थन की पृष्ठभूमि समझना।
- **वेदों के प्रति दृष्टिकोणः** दयानन्द के वेदों को सर्वोच्च प्रमाण मानने और मध्वाचार्य के वेदों के प्रती श्रद्धा के अंतर को देखना।
- **दर्शन की सामाजिक आवश्कता को समझनाः** इन विचारकों के दर्शन ने समाज में किस प्रकार की सुधार की आवश्कता को पहचानने में मदद की।
- **अंधविश्वास और कर्मकांडों का विरोधः** दयानन्द के अंधविश्वास और कर्मकाणों के विरोध का अध्ययन करना।
- **भक्ति का स्थानः** मध्वाचार्य द्वारा भक्ति को प्रमुख साधन मानने और दयानन्द द्वारा ज्ञान पर जोर देने के बीच अंतर को देखना।
- **दर्शन के माध्मय से तात्विक सत्य को जाननाः** ब्रह्म के वास्तविक स्वरूप को समझने के लिए दोनों आचार्यों के विचारों का अध्ययन करना।
- **समाज में धार्मिक विविधता की समझः** विभिन्न धार्मिक दृष्टिकर्णों के बीच सामंजस्य बनाने का प्रयास करना।
- **धार्मिक विचारों का परस्पर तुलनाः** दोनों के दर्शन की तुलना करना और यह समझना कि कैसे वे अपने समय में प्रभावी हुए।
- **प्रत्येक विचारक की व्यक्तिगत अनुभवों का अध्ययनः** उनके जीवन और समय की परिस्थितियों को समझना, जो उनके विचारों पर प्रभाव डालते हैं।
- **धार्मिक और दार्शनिक चिंतन की पंरपरा को आगे बढ़ानाः** इन विचारकों के विचारों के आधार पर समकालीन धार्मिक और दार्शनिक विमर्श को प्रेरित करना।

परिकल्पना

''धार्मिक और दार्शनिक दृष्टिकोणों में भिन्नता होते हुए भी, दोनों आचार्यों के विचार भारतीय समाज में ब्रह्म की अवधारणा और मोक्ष के मार्ग को समझने के विभिन्न तरीके प्रदान करते हैं, जो व्यक्ति की आस्थाओं, मानसिकता और सामाजिक सुधार की आवश्यकता के अनुसार उनके जीवन में व्यावहारिक बदलाव ला सकते हैं।''

इस परिकल्पना के तहत, हम यह मान सकते हैं किः

- **विविधता का सम्मानः** चाहे मध्वाचार्य का द्वैतवाद हो या दयानन्द का निराकार ब्रह्म, दोनों दृष्टिकाण समाज में भिन्न प्रदार की आस्थाओं और विश्वासों को जन्म देते हैं। इसके माध्यम से हम यह समझ सकते हैं कि विभिन्न धार्मिक और दार्शनिक विचारों के बावजूद, उनका उद्देश्य आत्मज्ञान और मोक्ष की और मार्गदर्शन करना है।
- **समाज में सुधार की आवश्यकताः** दोनों के विचारों के माध्यम से यह परिकल्पना प्रस्तुत की जा सकती है कि धार्मिमक सुधार के जरिए समाज में व्याप्त अंधविश्वास, कर्मकांड और रूढ़िवादिता का विरोध किया गया। इन विचारों ने समाज को भक्ति, ज्ञान और तर्क की दिशा में प्रेरित किया।

- **प्रत्येक व्यक्ति का आध्यात्मिक मार्गः** इस परिकल्पना से यह भी संकेत मिलता है कि एक व्यक्ति अपने आध्यात्मिक मार्ग को ढूंढने के लिए विभिन्न धार्मिक और दार्शनिक विचारों से मार्गदर्शन ले सकता है, चाहे वह भक्ति के माध्यम से हो या ज्ञान के माध्यम से।
- **धार्मिक और दार्शनिक विमर्श का प्रभावः** इस परिकल्पना का उद्देश्य यह है कि विभिन्न विचारों का एकीकरण भारतीय समाज में धार्मिक और दार्शनिक विमर्श को प्रोत्साहित करता है, जिससे सत्य की और अग्रसर होने के लिए अधिक जागरूकता और समझ विकसित होती है।

इस प्रकार, परिकल्पना यह मानती है कि दोनों के विचार भारतीय समाज के लिए समृद्ध विचारधारा प्रस्तुत करते हैं, जो न केवल धार्मिक चेतना को बल देते है, बल्कि समाज में सुधार की दिशा में भी मार्गदर्शन करते हैं।

शोध विधियाँ

- **साहित्यिक सर्वेक्षणः** दोनों आचार्यों के ग्रंथों, उनके लेखन और उनके अनुयायियों द्वारा लिखित साहित्य का गहन अध्ययन किया जाएगा।
- **तुलनात्मक अध्ययनः** मध्वाचार्य के द्वैतवाद और दयानन्द के निराकार ब्रह्म के सिद्धांतों की तुलनात्मक विश्लेषण विधि का उपयोग किया जाएगा।
- **ऐतिहासिक विश्लेषणः** दोनों आचार्यों के जीवन और समय की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को समझने के लिए ऐतिहासिक विधि का उपयोग किया जाएगा, ताकि उनके विचारों को सही संदर्भ में रखा जा सके।
- **दर्शनशास्त्र (फिलॉसफी) का अध्ययनः** उनके ब्रह्म संबंधी विचारों को दर्शनशास्त्र की दृष्टि से विस्तृत रूप से विश्लेषित किया जाएगा।
- **आधिकारिक ग्रंथों का अध्ययनः** मध्वाचार्य के ''वेदांत–दृष्टि'' और दयानन्त सरस्वती के ''सत्यार्थप्रकाश'' जैसे प्रमुख ग्रंथों का विश्लेषण किया जाएगा।
- **साक्षात्कार और संवादः** संबंधित विद्वानों, शोधकर्त्ताओं और धार्मिक गुरूओं से साक्षात्कार या संवाद किया जा सकता है ताकि विभिन्न दृष्टिकोणों को समझा जा सके।
- **प्रसिद्ध उदाहरणों और शास्त्रों का विश्लेषणः** दोनों आचार्यों द्वारा दिए गए महत्वपूर्ण उदाहरणों और शास्त्रों का विश्लेषण किया जाएगा ताकि उनके विचारों की गहरी समझ प्राप्त की जा सके।
- **सामाजिक और धार्मिक प्रभावों का अध्ययनः** उनके विचारों के सामाजिक और धार्मिक प्रभावों का विश्लेषण किया जाएगा, खासकर उनके समय के समाज पर इनके प्रभाव का अध्ययन।
- **संदर्भ और आलोचनाः** अन्य दार्शनिकों और धार्मिक विचारकों द्वारा की आलोचनाओं और समर्थन का अध्ययन करके एक गहन परिप्रेक्ष्य विकसित किया जाएगा।
- **नैतिक और आध्यात्मिक संदर्भः** उनके विचारों का नैतिक और आध्यात्मिक संदर्भ में मूल्यांकन किया जाएगा, ताकि यह समझा जा सके कि उनके सिद्धान्त आधुनिक समय में कैसे प्रासंगिक हैं।

निष्कर्ष

- **धार्मिक विविधता और समझः** दोनों आचार्यों के ब्रह्म संबंधी विचार भारतीय दर्शन की धार्मिक विविधता को प्रदर्शित करते हैं। मध्वाचार्य का द्वैतवाद और दयानन्द का निराकार ब्रह्म दोनों ही अपने–अपने संदर्भ में महत्वपूर्ण हैं, जो अलग–अलग प्रकार के व्यक्तियों के मानसिकता और आस्थाओं को समझने में मदद करते हैं।
- **विचारों की भिन्नता का महत्वः** जहां मध्वाचार्य ने भगवान (विष्णु) और जीव के बीच स्पष्ट भेद को माना और भक्ति को प्रमुख साधन समझा, वहीं दयानन्द ने निराकार ब्रह्म की अवधारणा के जरिए ज्ञान और तर्क को प्रमुख माना। दोनों के विचारों में भिन्नता होते हुए भी उनका उद्देश्य एक ही है–व्यक्ति के आध्यात्मिक उत्थान और मोक्ष की प्राप्ति।

- **समाज सुधार और धार्मिक जागरूकताः** दोनों आचार्य समाज में सुधार के पक्षधर थे। मध्वाचार्य ने भक्ति और धार्मिक अनुशासन के माध्यम से समाज में धार्मिक जागयकता फैलाने का प्रयास किया, जबकि दयानन्द ने अंधविश्वास, कर्मकांड और मूर्तिपूजा का विरोध करते हुए वेदों के शुद्ध ज्ञान को प्रमोट किया।
- **धार्मिक विमर्श में योगदानः** इन दोनों के विचार भारतीय धार्मिक विमर्श में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। उनके विचार न केवल भक्ति और ज्ञान के माध्यम से मोक्ष के मार्ग को स्पष्ट करते हैं, बल्कि समाज में धार्मिक सुधार के माध्यम से एक नया दृष्टिकोण उत्पन्न करते हैं।
- **आधुनिक समय में प्रासंगिकताः** दोनों आचार्यों के विचार आज भी प्रासंगिक हैं, क्योंकि वे हमें धर्म, तात्विक सत्य और मोक्ष की अवधारणाओं को नए दृष्टिकोण से देखने का अवसर प्रदान करते हैं। उनके सिद्धांत सामाजिक और धार्मिक समरसता की दिशा में मार्ग दर्शन करते हैं।

अंततः मध्वाचार्य और दयानन्द सरस्वती के ब्रह्म संबंधी विचारों का अध्ययन यह सिद्ध करता है कि विभिन्न दृष्टिकोणों के बावजूद, उनका उद्देश्य मानवता का उद्धार और समाज का सुधार है। उनके सिद्धांत न केवल धार्मिक दृष्टिकोण को स्पष्ट करते हैं, बल्कि मानवता के लिए सत्य और ज्ञान की दिशा भी दिखाते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. वेदांत दर्शन – मध्वाचार्य कृत, श्रीविध्नेश्वर प्रेस
2. सत्यार्थ प्रकाश – दशनन्द सरस्वती कृत, आर्य समाज प्रकाशन
3. मध्वाचार्य की वेदांत दार्शनिकता – डॉ. हरिवल्लभ त्रिपाठी कृत, भारतीय पुस्तक निवेतन
4. दयानन्द सरस्वती : जीवन और दर्शन – डॉ. नरेंद्र कुमार कृत, विद्या प्रकाशन
5. भारतीय वेदांतः एक तुलनात्मक अध्ययन – डॉ. सुरेन्द्र कुमार शर्मा कृत, भारतीय ज्ञान केन्द्र
6. मध्वाचार्य का दर्शन – डॉ. रामनाथ यादव कृत, भारतीय संस्कृत संस्थान
7. स्वामी दयानन्द का समाज सुधार – डॉ. राधेश्याम त्रिपाठी कृत, आर्य समाज प्रकाशन।

❖◆❖